शेखर जोशी की कहानियों में चित्रित पहाड़ी एवं ग्रामीण समाज जीवन में आधुनिकता बोध

शोधार्थी श्री सुनिल दिनकर कांबळे
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान दक्षिन भारत हिंदी प्रचार सभा
धारवाड(कर्नाटक)

प्रस्तावना:-

कहानीकार शेखर जोशी जी के कहानियों का संसार ग्रामीण पहाड़ी, महानगरीय, एवं औद्यौगिक परिवेश से जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि नई कहानी के अन्य लेखकों से इनकी कहानियों का विषय अलग करता है। परिवेश से जुड़े होने के कारण इनकी कहानियों में पहाड़ के ग्रामीण अंचल का चित्रण पाठकों को आकर्षित करता है। शेखर जी की कुछ कहानियाँ एक अर्थ में आंचलिक कहानियाँ भी है। इनकी कहानियों का विषय वस्तु उत्तराखंड के अल्मोड़ा जनपद से पहाड़ के आस-पास का है। आंचलिक कहानियों में आंचल का प्राकृतिक और ग्रामीण चित्रण सजीव दिखता है।

शेखर जोशी जी 1955 से 1986 तक एक सैनिक प्रतिष्ठान में कार्यरत थे। औद्योगिक प्रतिष्ठान में मजदूर वर्ग के साथ रहते हुए उन्होंने उन्हें अपना गुरु मान लिया था। इन मजदूरों से एवं कारीगरों से उनका घनिष्ठ संबंध रहा है। स्वभावता उनकी कहानियों में औद्योगिक जगत में काम करने वाले सभी लोगों के जीवन का चित्रण हुआ है। शेखर जोशी जी की कुछ कहानियों में महानगरीय परिवेश का अंकन हुआ है। ग्रामीण पहाड़ी कहानियों की तुलना में महानगरीय परिवेश का कम चित्रण होते हुए भी महानगर की ललक अनेक कहानियों में छायी रहती है।

ग्रामीण समाज और प्रकृति का संबंध बहुत पुराना है। प्राकृतिक सुषमा तो इस समाज को सहजता से प्राप्त होती है। क्योंकि अधिकतर गांव प्रकृति की गोद में बसे होते हैं। गांव का प्रमुख व्यवसाय कृषि होने के कारण कृषि से संबंधित बैल, घोड़े, गाय, हल, मजदूर आदि चीजों का होना अनिवार्य होता है। शेखर जोशी जी की 'सिनारियो' इस कहानी में ग्रामीण एवं पहाड़ी जीवन का आधुनिक चित्रण किया है। कहानी का नायक रवि वृत्तचित्र निकालने हेतु अपना सकरी थैला, स्लीपिंग बैग और फोटोग्राफी का भरपूर सामान लेकर पहाड़ का एक मित्र महेश के गांव आया था। गांव आने के बाद सामने पहले हुए हिम शिखरों को एकटक देखता ही रह गया। महेश ने ठीक ही कहा था, उसने सोचा हिमालय का ऐसा विस्तृत और अलौकिक फलन उसने पहले कभी नहीं देखा था। आसमान साफ था। अस्त हो होते हुए सूर्य का आलोक किन्ही अदृश्य दिशाओं में आकर उस संपूर्ण हिम विस्तार को सिंदूरी आभा से भर गया था। धीरे-धीरे वह

सिंदूरी आभा बैंगनी रंग में परिवर्तित होने लगी और पर्वत श्रिंखला की सलवटे गहरी श्यामल रेखाओं में अपनी पहचान बनाने लगी थी।" 1

कहानीकार शेखर जोशी जी पहाड़ के होने के कारणए उनकी कहानियों में पहाड़ी एवं ग्रामीण भाषा का खुलकर प्रयोग हुआ है। आंचलिक कथाकार आंचल विशेष की लोक भाषा का पात्र अनुकूल प्रयोग करता है। शेखर जोशी जी ने अपनी कहानियों में सहज एवं सरल भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने पात्रा में कुल लोक भाषा का भी प्रयोग किया है। उस पहाड़ी आंचल के लोग जो अशिक्षित हैं, अपनी पहाड़ी बोली में एक-दूसरे से बातचीत करते हैं। "हलवा हा" कहानी में इसका प्रयोग किया है। "पदम हो और पहली की आवाज में आया मालिक।" 2

इसी कहानी में अभी पहाड़ी भाषा का प्रयोग किया दिखता है- "यार जीबदा! कहीं से कुछ पैसों का जुगाड़ हो जाता तो किशन सिंह की तरह दुकान खोल ली जाती। खूब पैसा पीट रहा है आजकल।" 3

ग्रामीण एवं पहाड़ी गाँव के लोग धोती पहनते हैं। कुछ लोग कहीं-कहीं पैंट पहनते हैं। महिलाओं की वेश-भूषा के बारे में धोती और जम्फर का वर्णन किया है। दस प्रतिनिधि कहानियाँ, कहानी संग्रह की 'कथा-व्यथा' कहानी की नायिका जीवंती की वेश-भूषा का जिक्र किया है। बड़े घर के सत्यनारायण की पूजा में जीवंती जाने वाली थी। जीवंती ने अधीरता से पूछा कि- ष्है रे तिलूवा! लोग आ गए हैं कि नहीं ? पूजा में कितनी देर है रे?" तिलूवा ने दो क्षण बाद खबर दी- "अब पूरी तैयारी हो गई है, बहुजी!" ष्जीवंती झटपट धोती बदलकर पल्लू सिर पर डालते हुए बाहर निकली।" 4

इसी कहानी संग्रह की 'कोसी का घटवार' कहानी में, कहानी का नायक गुसाँई , हवलदार धरमसिंह की पैंट से प्रभावित होकर फौज में प्रवेश कर लेता है। "ऐसी ही फौजी पैंट पहन कर हवलदार धरमसिंह आया था। लॉन्ड्री की धुली मोकदार क्रीजवाली पैंट, वैसी ही पैंट पहनने की महत्वाकांक्षा लेकर गुसाँई फौज में गया था। ग्रामीण एवं पहाड़ी समाज के ज्यादातर लोग रोटी खाते हैं। 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' कहानी संग्रह के 'कोसी का घटवार' कहानी में गुसाँई, लछमा के हाथ की बनी हुई रोटी की तारीफ करते हुए कहता है कि "लोग ठीक ही कहते हैं, औरत की हाथ की बनी रोटियों में स्वाद ही दूसरा होता है।"5

इसी कहानी संग्रह की 'समर्पण' कहानी में खान-पान का जिक्र किया है। "कुछ दिनों से बड़े बरतन न मॉजने का सुख हो रहा था। अब फिर वही बवाल शुरू हो गया है। हलिया कसम डाल गया कि बहूरानी! किसी से कहना मतए कड़ाही में भात डालकर गाय के गोठ में रख देना। वहीं खाकर मॉज जाऊँगा। रोटियाँ खा-खाकर पेट में आग सी बलने लगी है।" 6

'मेरा पहाड़' के 'कि करोमि जनार्दन' कहानी में खान-पान का वर्णन किया है। कहानी में नित्यानज्यू की ज्येष्ठ बहू उन्हें कहती है कि- "हाँ बड़े धर्मात्मा हैं, सर्दियों में एक दिन भी नहाया नहीं, बण्डी पहने ही चौके में भात खाने बैठ जाते हो, आज एक छोटी सी बात के लिए उसका धरम बिगड़ जाएगा!" 7 इसी कहानी के ग्रामीण एवं पहाड़ के शादी की बारात के खान-पान का वर्णन किया है।

निष्कर्ष :-

भारत की संस्कृति और उसकी सभ्यता ग्रामों में बसी हुई है। ग्राम ही हमारे देश के रीड की हड्डी हैं। ग्रामीण समाज का साहित्य से संबंध हमेशा से रहा है। कहानीकार शेखर जोशी जी ने अपने कथा साहित्य में ग्रामीण एवं पहाड़ी

समाज के यथार्थ दशा से पाठकों को परिचित कराने का सफल प्रयास किया है।

समग्र अध्याय में विहंगावलोकन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि शेखर जोशी जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से आधुनिक ग्रामीण समाज जीवन, ग्रामीण एवं पहाड़ी वातावरण, ग्रामीण एवं पहाड़ी जीवन शैली को बड़े ही सतर्क दृष्टि से उजागर किया है। शेखर जोशी जी का 'मेरा पहाड़' कहानी संग्रह पहाड़ी परिवेश की कहानियों का है। इनकी सभी ग्रामीण एवं पहाड़ी कहानियों में ग्रामीण जीवन की विवशता, दर्द और संघर्ष को सहानुभूति के साथ व्यक्त किया है। अतः कहानीकार शेखर जोशी जी ने सतर्कता के साथ ग्रामीण एवं पहाड़ी समाज के जीवित प्रक्रिया को उजागर करने में सफलता प्राप्त की है।

संदर्भ ग्रंथ -

1.शेखर जोशी, 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' पृ क्र 64
2.शेखर जोशी .मेरा पहाड पृ क्रं .25
3.वही . पृ क्रं .27
4.शेखर जोशी . दस प्रतिनिधि कहानियाँ पृ क्रं33
5.वही .पृ क्रं .63
6 शेखर जोशी . मेरा पहाड पृ क्रं 71
7.वही .पृ क्रं 37

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com